ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का कलात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़ आगरा से चित्रकला विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रुपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ. मीनाक्षी ठाकुर
असिस्टेंट प्रोफेसर,
ड्रॉइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय

शोध छात्रा
प्रियंका सिह

ड्राइंग एण्ड पेन्टिग विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा–282005

2021

शोध संकल्पना

भारत की चित्रकला को भारतीय सभ्यता का स्वरुप माना जाता रहा हैं। भारत में विभिन्न प्रकार की कलाऐं हैं जो समय–समय पर विकसित हुई।कला स्वंय को ही अनेक स्वरुपों को समेंटे हुऐ हैं। जिनमें वास्तुकला, मूर्तिकला, तथा चित्रकला प्रमुख हैं। हमेशा से ही भारत की कलाऐं और हस्तशिल्प इसकी संस्कृति, परम्परा और प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करने का मध्यम रहे हैं। देश भर में फैले राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की अपनी विशेष संस्कृति और पारम्परिक पहचान हैं जोकि वहाँ प्रचलित कला के भिन्न–भिन्न रुपों में दिखाई देती है। भारत के हर प्रदेश देती है। भारत के हर प्रदेश मे अपनी एक विशेष शैली और पद्धति हैं जिसे लोक कला के नाम से जाना जाता हैं। लोक कला के अलावा भी परम्परागत कला का एक अन्य रुप भी है जो अलग–अलग जनजातीयों और ग्रामीण क्षेत्रों प्रचलित हैं जिसे जनजातीय कला के रुप मे विकसित किया गया है। भारत में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न जनजातीयाँ निवास करती है। कुछ क्षेत्रों में अधिक कुछ क्षेत्रो में कम संख्या मे रहती हैं।

भारत में इन जनजातियों में से सौरा जनजाति प्रमुख मानी जाती है। जो कि ओडिशा राज्य में निवास करती है। ओडिशा राज्य में 62 जनजातियाँ पाई जाती हैं जिसमें सौरा जनजाति द्वारा निर्मित सौरा कला का एक अपना एक विशिष्ट स्वरूप है, इसी कारण ''ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का कलात्मक अध्ययन'' को मैंने मेरे शोध के विषय के रूप में चुना है। सौरा जनजातीय कला दक्षिणी ओडिशा में पाई जाती है। सौरा कला के चित्रण को 'इकांन' के रूप में जाना जाता है। जिसका सौरा जनजाती के लोगों के लिये विशिष्ट धार्मिक महत्व है। सौरा कला को पारंपरिक ज्ञान और लोक कथाओं का खजाना मानाजाता है एवं सौरा जनजातीय कला के चित्रों में उनके इन्हीं साहित्यों क दर्शन दृष्टव्य होता है। सौरा जनजाती द्वारा दैनिक जीवन के विषयों को भी अपनी कला में स्थान दिया गया है। सौरा कला मात्र एक कला ही नहीं है अपितु यह सौरा जनजाती के लोगों की सांस्कृतिक प्रथाओं, इतिहास एवं धार्मिक मान्यताओं का प्रतिबिम्ब भी है।

सौरा जनजातीय कला में मनुष्य, घोड़ा, हाथी, सूरज, चंद्रमा आदि निम्नलिखित विषयों पर चित्रण कार्य किया जाता है। सौरा जनजाती द्वारा आमतौर पर देवी–देवताओं और पूर्वजों को प्रसन्न करने के लिए चित्रण कार्य किया जाता है और इन चित्रों को इनके आकर्षक चित्रण सौन्दर्य के लिए ही जाना

जाता है। सौरा कला की मुख्य विशेषता यह कि इसमें महिला पुरूष की आकृतियाँ त्रिकोणीय रूप में देखने को मिलती है। सौरा कला में मुख्य रूप से ज्यामितीय आकृतियाँ देखने को मिलती हैं, जिनको बहुत ही जीवंत और रंगीय बनाया गया है जो कि सौन्दर्यपूर्ण छवि को उकेरता है। सौरा कला में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। घरों की मिट्टी की दीवारों पर भी सौरा जनजाति के लोग प्राकृतिक रंगों द्वारा अलंकरण करते हैं, जैसे– चावल, सफेद पत्थर का चूर्ण, फूल पत्ती का अर्क आदि। सौरा चित्रों को बनाने के लिये बॉस के तुलिका का प्रयोग किया जाता है। सौरा जनजातियों के चित्र धार्मिक देवता 'इदितल' को समर्पित किये जाते हैं। आमतौर पर इनका चित्रण किसी भी त्यौहार, विवाह, बच्चे के जन्म, नये घर में प्रवेश आति अच्छे अवसरों के दौरान किया जाता है, जिसके दौरान उनकी पूजा की जाती है। सौरा भारत की सबसे पुरानी जनजातियों में से एक मानी जाती है। जनजाति कलाओं के माध्यम से स्वसृर्जित एवं स्वअर्जित की हुई कलाओं एवं संस्कृतियों में मौलिकता के दर्शन होते हैं और कहीं भी ऐसा नही लगता कि जैसे कुछ बनावटी या कृत्रिम हो। जनजाति कला की यह सांस्कृतिक विरासत कोई एक दिन में अर्जित की हुई संरचना नहीं है बल्कि ये तो आदिवासियों द्वारा आदिकाल से अर्जित की हुई सम्पदा हैं जिसकी नकल करके आज दुनिया की ना जाने कितनी बाजारवादी कलाऐं फल–फूल रही हैं। मेरे शोध का मुख्य उद्देश्य सौरा जनजातीय कला के कलात्मक पहलू को अपरिचित जनमानस तक पहुँचाना है। अपने शोध प्रबन्ध में सौरा जनजातीय कला से सम्बन्धित तथ्यों का वर्णन सरल भाषा में विषय के अनुरूप करने का प्रयास करूँगी।

सम्बन्धित साहित्य का पुर्नावलोकन

किसी भी विषय पर शोध करने से पूर्व हमें उससे सम्बन्धित तथ्यों का अनुशीलन करना महत्वपूर्ण समझा जाता है तथा उससे सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन महत्वपूर्ण है। जिसका पुर्नावलोकन करके वर्तमान शोध को कुशल एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। मैंनें अपने शोध विषय के चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया। संग्रहालयों में संग्रहित प्राचीन साहित्य के माध्यम से जनजातीय कला के बारे में पढ़ा जिसमें मुझे ओडिशा की सौरा जनजातीय कला के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ और जनजाति कला से मैं अत्यधिक प्रभावित हुयी। इस विषय से सम्बंधित सामग्री के लिये मैंनें **नेशनल**

गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली तथा **शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली** आदि स्थलों का भ्रमण किया एवं पुस्तकालयों में पुस्तकों का गहन अध्ययन किया।

मैंनें लेखक डॉ0 चारु गुप्ता की पुस्तक "**Indian Folk and Tribal Painting.**" का अध्ययन किया जिससे मुझे लोक व जनजातीय कला की ऐतिहासिकता तथा प्राचीनता की जानकारी प्राप्त हुई ।

लेखक **सी0 बी0 पटेल** की पुस्तक "**The sauras and their panoramic**" के अध्ययन से सौरा जनजाति कला के संदर्भ में तथा जनजाति के उद्भव एवं विकास के बारे में जाना ।

लेखक "**विजयशंकर उपाध्याय** " की पुस्तक **''भारत की जनजातीय संस्कृति''** के अध्ययन से भारत की जनजाती तथा संस्कृति के संदर्भ में जानकरी प्राप्त की तथा जनजातीय कला का ज्ञान प्राप्त हुआ।

इन सभी उपलब्ध स्त्रोतो से प्राप्त जानकारी के आधार पर मुझे सौर जनजातीय कला से सम्बंधित विविधता एवं शैलीगत कलात्मक विषेशताओं का गहन अध्ययन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त विभिन्न वेबसाइट्स का भी अवलोकन किया जिसके अध्ययन से मुझे शोध विषय में सरल वर्गीकरण के साथ ही इसे पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी ।

परिकल्पना

एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि उसकी परिकल्पना एकदम स्पष्ट व अर्थपूर्ण हो। शोध प्रारम्भ करने से पूर्व शोध परिकल्पना को तैयार करना अति आवश्यक हैं। भारतीय जनजातीय कला की परम्परा, ऐतिहासिक और प्राचीन हैं। इस भारतीय प्राचीन परम्परा का उत्कृष्ट उदाहरण हमें अनेक प्रान्तों में देखने को मिलता हैं। इन सब में ही ओडिशा की सौरा जनजातीय कला भी हैं। भारत की अन्य जनजातीयों की तरह सौरा जनजाति की कला में उनके जीवन की अनूठी शैली, विविधता और विस्तार का चित्रण मिलता है। यह कला एक प्रकार का भित्ति चित्रण मानी जाती हैं जो भारत के पूर्वी राज्यों खासकर ओडीशा में देखने को मिलती हैं। सौरा के चित्रो को इकॉन कहा जाता हैं जो कि सौरा जनजाती के लोगो के लिए धार्मिक महत्व रखता है। सौरा कला में सौरा जनजाती के लोगो के इतिहास, दर्शन और धार्मिक मान्यताओं को स्पष्ट रुप से दर्शाया जाता हैं। सौरा जनजातीय कला आज भी प्रचलन में हैं।

मैं अपने शोध अध्ययन, भारतीय जनजातीय कला में से विकसित हुई ''सौरा की जनजातिय कला'' का कलात्मक व सौदर्यात्मक विवेचन प्रस्तुत करुँगी जोकि जनजातीय कला का उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ उदाहरण है तथा जनजातीय कला का प्राचीन स्वरुप भी सबके समक्ष लाने का पूर्ण प्रयास करुँगी ।

उद्देश्य व लक्ष्य

शोध कार्य के विषय ''सौरा की जनजातीय कला का कलात्मक अध्ययन'' के वर्णन हेतु उद्देश्य व लक्ष्य इस प्रकार है–

- आदिकालीन जनजातीय कला परम्परा का संक्षिप्त ऐतिहासिक सर्वेक्षण।
- ओडिशा क्षेत्र का भौगोलिक, ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक परिदृष्य तथा ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का उदभव तथा विकास का अध्ययन।
- सौरा जनजातीय कला के कलात्मक एंव सौन्दर्यात्मक स्वरुपों की विवेचना का विस्तृत अध्ययन।
- सौरा जनजातीय कला की विषय वस्तु, इनमें प्रयुक्त रंग, माध्यम एवं तकनीक की सूक्ष्म विवेचना के आधार पर अध्ययन करने का प्रयास करुँगी ।

चर

- ➢ स्थानीय भ्रमण एंव अध्यक्षों से साक्षात्कार।
- ➢ सौरा जनजातीय कलाकारों से साक्षात्कार।
- ➢ विभिन्न कला संग्रहालयो का भ्रमण।
- ➢ कला शिक्षकों से वार्तालाप।
- ➢ कला समीक्षक।
- ➢ कला विद्यार्थी।
- ➢ पुस्तकें।
- ➢ विवरणिका।
- ➢ इंटरनेट वेबसाइट्स।

अनुसंधान अभिकल्प

इस शोध कार्य '' ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का कलात्मक अध्ययन'' वर्णात्मक अनुसंधान पर आधारित रहेगा।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्त का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों पर आधारित रहेगा ।

प्राथमिक स्रोत – ओडिशा की सौरा जनजातीय कला की केंद्रों का भ्रमण एंव सौरा जनजाति के लोगों का साक्षात्कार।

द्वितीय स्रोत – पुस्तकें, प्रकाशित पत्र पत्रिकाएं, समाचार पत्र, कैटलॉग, वेबसाइट्स, संग्रहालय एवं पुस्तकालयों के भ्रमण आदि।

– मेरी सम्मानीय निर्देशिका से कार्य विशेष पर वार्तालाप ।

प्रतिदर्श आकार – मेरे शोध कार्य हेतु 200–250 प्रतिदर्शों का चयन किया गया हैं।

साक्षात्कार

सौरा जनजाति के लोगों से साक्षात्कार, कला समीक्षकों से साक्षात्कार और सौरा कला के कलाकारों से साक्षात्कार किया जाएगा ।

सीमाएँ

प्रत्येक शोध कार्य एक समय सीमा पर आधारित होता है मैं अपने शोध कार्य को समय अवधि में एकत्रित पत्रों के आधार पर पूर्ण करने का प्रयास करूँगी । शोध कार्य कला समीक्षकों के साक्षात्कार, पुस्तकों पत्र–पत्रिकाओं अवलोकन व संग्रहालयो आदि पर आधारित होगा।

आधुनिक युग में प्रासंगिता

प्राचीनकालीन धरोहरों से हमें तत्कालीन घटित प्रत्येक ऐतिहासिक, भौगोलिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं का सन्दर्भ मिलता है। इसी प्रकार सौरा जनजातीय कला के चित्रों से हमें सौरा जनजाति के इतिहास के साथ–साथ कला संस्कृति का सम्बन्ध प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता हैं। हमारे समाज में भारतीय कला व संस्कृति का विशेष महत्व हैं। इसी प्रकार आधुनिक कला परम्परा में सौरा जनजातीय कला के योगदान के साथ ही कलात्मक पक्ष को प्रदर्शित किया जायेगा।

ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का कलात्मक अध्ययन

भूमिका – भारत की विभिन्न जनजाति का सिंहावलोकन।

प्रथम अध्याय–ओडिशा की भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

1.1 ओडिशा की सौरा जनजाति कला का उद्भव एवं विकास।

द्वितीय अध्याय– सौरा जनजातीय कला की विषयवस्तु।

2.1 धार्मिक

2.2 दैनिक जीवन

2.3 प्रकृति चित्रण एवं अलंकरण

2.4 मानव शरीर को गोदना

तृतीय अध्याय– ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का कला तत्व के आधार पर कलात्मक अध्ययन।

3.1 रेखा

3.2 रंग योजना

3.3 आकृति निरुपण

3.4 चित्र संयोजन

3.5 तकनीक

चतुर्थ अध्याय– ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का ओडिशा की अन्य जनजातीय कलाओं से तुलनात्मक अध्ययन।

4.1 ढोकरा जनजातीय कला

4.2 बोंडा जनजातीय कला

4.3 कोंध जनजातीय कला

4.4 संथाल जनजातीय कला

4.5 कोरबा जनजातीय कला

पंचम अध्याय – वर्तमान समय में सौरा जनजातीय कला की प्रासंगिकता।

5.1 वर्तमान समय में कार्यरत कलाकार

5.2 सौरा कला का बाजारीकरण

उपसंहार –

परिशिष्ट– **संदर्भ ग्रंथ सूची**

Bibliography

पत्र पत्रिकाएं

कैटलॉग

चित्र सूची

मानचित्र

इंटरनेट वेबसाइट्स

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका – भूमिका के अंतर्गत भारत की विभिन्न जनजातीय का सिंहावलोकन करुँगी।

प्रथम अध्याय– प्रथम अध्याय में ओडिशा क्षेत्र के भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ–साथ ओड़िशा में सौरा जनजातीय कला का उद्भव और विकास का अध्ययन उजागर किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय – द्वितीय अध्याय में ओडिशा की सौरा जनजातीय कला की प्रमुख विषयवस्तु का अध्ययन किया जाएगा। जिसमें धार्मिक, दैनिक जीवन, प्रकृति चित्रण एवं अलंकरण व मानव शरीर गोदना आदि का अध्ययन करूँगी।

तृतीय अध्याय – तृतीय अध्याय में सौरा जनजातीय कला का कला तत्व के आधार पर कलात्मक अध्ययन किया जाएगा। जिसमे रेखा, रंग योजना, आकृति निरुपण, चित्र संयोजन, तकनीक का अध्ययन करुँगी।**चतुर्थ अध्याय**– चतुर्थ अध्याय में ओडिशा की सौरा जनजातीय कला तथा ओडिशा की अन्य जनजातीय कला, ढोकरा जनजातीय कला, बोंडा जनजातीय कला, कोंध जनजातीय कला, संथाल जनजातीय कला, कोरबा जनजातीय कला का अध्यन किया जाएगा।

पंचम अध्याय– पंचम अध्याय के अंतर्गत वर्तमान समय मैं सौरा जनजातीय कला की प्रासंगिकता और वर्तमान युग में कार्यरत कलाकार और सैारा जनजातीय कला का बाजारीकरण प्रस्तुत करूँगी।

उपसंहार – उपसंहार के अन्तर्गत ''सौरा की जनजातीय कला का कलात्मक अध्ययन'' का आधुनिक युग में शोध कार्य के अध्ययन की प्रासंगिकता को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करुँगी।

दिनांक– शोध छात्रा

प्रियंका सिंह

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 – एल्विन, वेरियर – जनजातीय मिथक, आदिम जनजातीय कल्याण विभाग,वान्या प्रकाशन, आदिवासी विभाग, नई दिल्ली, 2008

2 – ग्रिडसन, डब्ल्यू दृ वी. – मध्यप्रदेश बरार में आदिवासी समस्यायें, आदिम जाति,कल्याण विभाग, वान्या प्रकाशन, भोपाल।

3 – तिवारी, कपिल – सम्प्रदा, आदिवासी लोक कला एंव तुलसी साहित्य अकादमी भोपाल, 2010

4 – भावसागर, वीरबाला – आदिवासी कला, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली।

5 – श्रीवास्तव, ए. आर. एन.– जनजातीय संस्कृति, इलाहबाद, विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2012

6 – शर्मा, बलदेव – आदिवासी विकास एंव सैद्धान्तिक विवेचन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1984

7 – उपाध्याय, विजय शंकर – 2009, भारत की जनजातीय संस्कृति मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2009

8 – तिवारी, शिव कुमार – मध्य प्रदेश के आदिवासी, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1984

9 – विधार्थी, ल.प्र. – भारती आदिवासी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1975

10 –सच्चिदानन्द – जनजातीय बिहार में सांस्कृति परिवर्तन, कलकत्ता, 1964

11– कुमार, एस – आदिवासी संस्कृति राजनीति, विश्व भारत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली,2009

12–गुप्ता, मंजु – जनजातीयो का समाजिक आर्थिक उत्थान, अर्जून पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2010

13– जोशी, रामशरण – आदिवासी समाज और शिक्षा ग्रन्थ शिल्प नई दिल्ली, 1996

14–तिवारी, राकेश कुमार – आदिवासी समाज में आर्थिक परिवर्तन, नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1990

Bibliography

1 - Gupta, Charu - Indian Folk and Tribal Painting Luster Press Roli Book, 2008.

2 - Kar , D.P.& Agarwal, S.N. . - Saura Painting of Orissa, Mahalaxmi Publications, Bangalore ,2004

3 - Kejriwal, H.K . - Arts of the Earth – Folk and Tribal Art, Museum.Karnataka , Chitrakala Parishath,Bangalore,2003.

4 - Mahapatra, S.K. - Tribal wall Painting of Orissa, Bhubhaneshwar1991.

5 - Nishonko, K.C. - Art of Saora: Idital Annual Report of Center for Analytical Research and Training Center , Koraput.2008

6 - Patel ,C.B. - The Sauras and Their Ponoramic Painting.2005

7 - Pathy, Dinanath - The Painted Icons-Wall Painting of the Sauras of South Orissa, Human Publishing House. 1996

8 - Pradhan ,S. - Understanding Saora Tribal Art and Rock Art of Bhimbhetka, Centeral India-An Ethnographic Approach. 2009

9 - Prasad, Prusty, - Tradition and Change in Saora Art.

10 - Eliwin , Virrir - Religion of an Indian ,Tribal Bombay Oxford University Press,1995.

INTERNET WEBSITES

- en.wikipedia/wiki/saura-painting
- https://in.pinterest.com/camichela3/tribal-art-orissa
- Wda.co.in/saura-paimting-tribalart-oforissa/
- https://eksparsh:wordpress.com/2010/05/30/saurapaintings/
- https://mamtavn.wordpress.com/2011/12/06/tribal-art-of-India/

- India4you.com/srcm_saura-painting.php
- Mathu-art-adventure-blogspot.com/2008/08/saura-painting.orissa.html
- En.wikipedia.org/wiki/tribals
- https://www.google.com/search?q=saura+tribal+painting&client
- www.artculturefestival.in

परिशिष्ट

Figure-1 Idital-1 ,Tribe- Lanjia saura ,Rayagada, Odisha State Tribal Museum Bhubaneshwer, Medium- Natural color (rice powder)on silk.

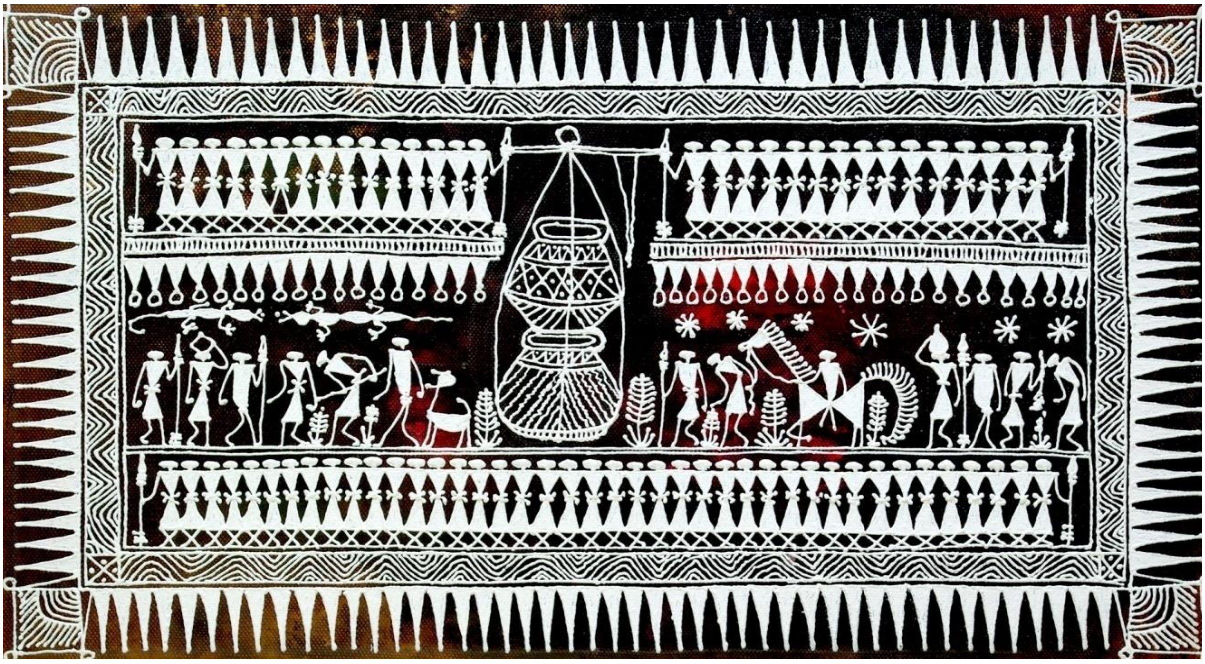

Figure-2 Idital-2 ,Tribe- Lanjia saura ,Rayagada, Odisha State Tribal Museum, Bhubaneshwer, Medium- Natural color (rice powder)on silk

.

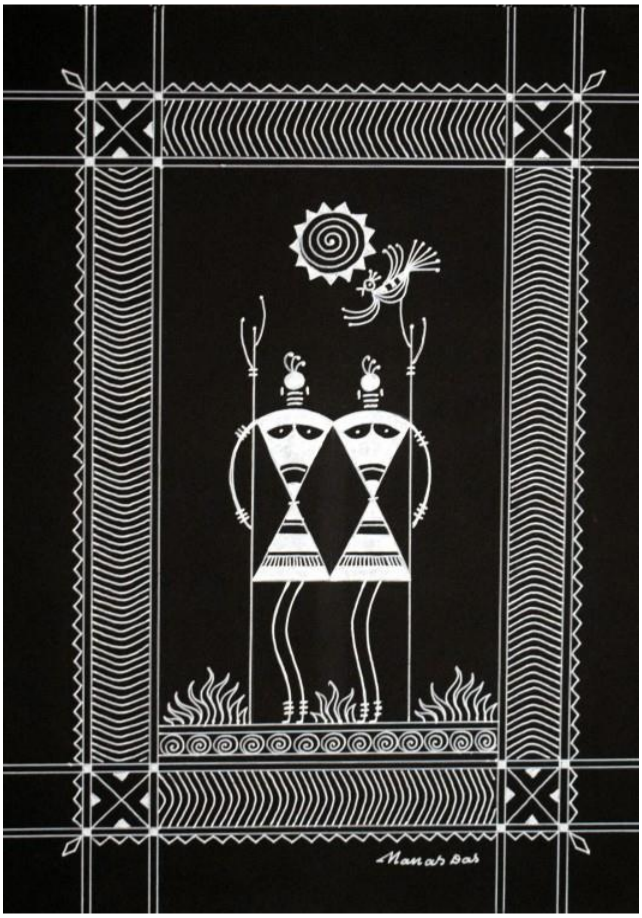

Figure -3 Saura painting by Mannas Das Medium-Acrylic on paper, 2018 Art of the earth gallry, New Delhi

Figure-4 Saura painting by Mannas Das Medium-Acrylic on paper,2018 Art of the earth gallry, New Delhi

Figure-5 Idital-3 ,Tribe- Lanjia saura ,Rayagada, Odisha State Tribal Museum, Bhubaneshwer, Medium- Natural color (rice powder and Red oxide color)on silk.

Figure-6 Saura art , painted icons, Medium – natural color on mud wall, Odisha